eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

आधुनिक शिक्षा में कवीर के विचारों की प्रांसगिकता

[1]मंजुला पचौरी
[1]शोधार्थी, जे0 एस0 विश्वविद्यालय शिकोहाबाद, फिरोजाबाद (उ0प्र0)

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

शब्द संत साहित्य ऐसी निर्मल धारा है जिसमें गोते लगाकर हम मानवीय मूल्यों की रक्षा कर चहुंओर शीतलता और स्वच्छता को प्रसूत कर सकते है। हम अपनी महान परंपरा और संस्कृति के संतरूपी पुरखों से बहुत कुछ गृहण कर उस धरती की रक्षा कर पायेगें। जिसमें मानवीयता पल्लवित और पुष्पित होती है। संत कबीर भक्ति आंदोलन से उपजे ऐसे संत है। जिन्होनें अध्यात्म के साथ मानवीय अस्मिता एवं उसके मूल्यों का परचम सम्पूर्ण विश्व में लहराया।

बीज शब्द – संचार, चिंतक, संवाद, धर्म, सांप्रदायिकता, सद्भावना, मानवीय चिंतन।

Introduction

अपने युग के साथ भक्तिकालीन संत कवीर का रचनात्मक संवाद आज भी जीवन स्थितियों में भी प्रासंगिक बना हुआ है। उत्तर भारत की हिन्दी भाषी जनता में तुलसीदास के उपरान्त यदि किसी अन्य काव्य लोगों की जवान पर चढ़ा हुआ है तो वह कबीर ही है। कबीर की साखिया उनके पद लोगों को कंठस्थ है। जिनहे वे अनेक अवसरों पर उदाहण स्वरूप प्रस्तुत करते हैं। कबीर को जो लोकप्रियता प्राप्त हुई उसका मूल कारण यह है कि उनके काव्य में अनुभूति की सच्चाई और अभिव्यक्ति का खरापन है, उन्हें जो अच्छा लगा उसका खुलकर समर्थन किया और उन्हे जो बुरा लगा उसका विरोध उन्होंने निर्भाकता के साथ किया उनका यह खरा स्वभाव लोगों को पसंद आया और इसलिये वे जनता के कंठ हार बन गये। कबीर का जन्म आज से 600 वर्ष पूर्व हुआ है किंतु उनकी शिक्षाये आज भी प्रासंगिक हैं। यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि आज उनकी शिक्षाओं की आवश्यकता तत्वकालीन युग की उपेक्षा अधिक है उस समय हिन्दू मुस्लिम जनता आपस में मंदिर मस्जिद के लिये आपस में संघर्षत थी। धर्म के ठेकेदार धार्मिक उम्माद के चूल्हे पर स्वार्थ की रोटियाँ सकते थे। वैसा ही वर्तमान समय में हो रहा है वोटो की कलुषित राजनीति ने इसे और भी गंदा कर दिया। मंदिर मस्जिद के नाम पर साम्प्रदायिक दंगे तब भी होते थे और आज भी हो रहें है।

कबीर के सर्वधर्म समभाव का सन्देश दिया। हिन्दुओं और मुसलमानों के उन दोषो को पूरी निर्भीकता से उजागर किया, जिनके आधार पर वे एक दूसरे के शत्रु बने हुये थे। क्या आज हिन्दू–मुस्लिम समस्या सुलझ गया है? यदि नही ंतो कबीर आज भी प्रसांगिक हैं। कवीर ने भक्ति का जो पथ दिखलाया उसको ध्यान में रखने पर भी कवीर की प्रांसगिकता में कोई कमी नहीं आती है।

कबीर ने किसी विषेश सम्पद्राय या पूजा प्रकति का प्रचार नहीं किया। इस लिये उन्होंने परमेश्वर के लिए राम, कृष्ण, केशव, करीम, अल्लाह खुदा, रहमान, गोबिद, माधव आदि सभी प्रचलित नामों

©IJARMS JOURNAL, 2024

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

का ग्रहण किया और शुद्धाचरण तथा निर्भकता पर आधारित भक्ति का संदेश दिया। कबीर हिन्दी भक्तियुग में इस दृष्टि से सर्वाधिक बाह्वा व्यक्त्वि है यहाँ उल्लेखनीय है, कि साहित्य अपनी रसात्यकता अहलाद एवं रमणीयता के कारण कभी अप्रसांगिक नहीं होता है। समाज में पाखण्ड ब्रहचार, अन्धविश्यवास एवं रूढ़ियों पर कुठारा घात किया। छल, कपट, द्वेष, असत्य, अज्ञान, भ्रम का डटकर विरोध किया तथा निश्चयता, सत्य अंहिसा ज्ञान एवं विवके का मार्ग दिखाया । हम लोग जिस धार्मिक विद्वेष के माहौल में जीवन यापन कर हरे है। उसमें कबीर की शिक्षाये अधिक भूमिका का निर्वाह कर सकती है नैतिक मूल्यों का क्षरण तथा मानवीय मूल्यों का विघटन समाज में दिखाई दे रहा हैं, उसके विषपूर्ण प्रभाव को कम करने के लिय कवीर की अमृतवाणी की आवश्यकता है।

मानव समाज और कवीर की शिक्षाः–

मध्ययुग में कबीर और संतो की वाणी ने अप्रत्यक्ष रूप में सर्वशक्ति मान को दिखाया वह आज भी उतना ही महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है जितना तत्कालीन युग में था। कबीर ने अपने तर्क और अनुभव की कसौटी पर कसा, जो विश्वास मान्यतायें, मानवता, नैतिकता, एवं भक्ति की राह में व्यर्थ वाधक थे उनका विरोध किया। मध्ययुग मे मुगलों के आक्रमणों, धर्मातरण, देशी राजाओं की विलासिता, धार्मिक पाखण्डता, भय, कुंठा, सांप्रदायिकता रूढ़ियों, अंधविश्वासों एवं कुरीतियों का युग था। उस समय में कवियों ने समय की नस को पकड़ा। अपने अनुभव, जो देखा और सहा उनकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति कबीर की वाणी है। मानवता करा रही थी। उनके अनुसार ऊंचे कुल में जन्म लेने से ब्रह्मण होने मात्र से कोई ऊँचा या श्रेष्ठ नहीं हो जाता। मनुष्य अपने सद् कर्मों और उच्च आचरण से ऊँचा बनता है।

ऊँचे कुल या जनमियाँ, जे करणी ऊँच न होई
सोवन कलास सुरैं भरया, साधसू निंदत सोइ'' ।।

कबीर का युग सामाजिक – सांस्कृतिक दृष्टि से अनास्था विघटन और वर्जनाओं का युग था। सामाजिक , राजैतिक सभी निर्णयों के आधार पर धर्मशास्त्र होते थे। जो धर्म समाज आस्था, राजनीति एवं अन्याय के लिये जिम्मेदार भी था। कबीर ने समाज को अहसास दिलाया कि भक्ति भगवान कि पैत्तक संम्पत्ति नहीं है। उस पर सभी का समान अधिकार है। भक्ति के लिये किसी विशेष क्षण , तिथि, वेशभूषा कर्मकाण्ड, स्थान की आवश्यकता नहीं है। कवीर भक्ति में प्रेम को अधिक महत्वपूर्ण मानते है।, क्योंकि प्रेम के अभाव में भक्ति निरर्थक और दंभमात्र है। आधुनिक सन्दर्भ में इस काव्य की संकल्पनाओं में निहित मूल्यों का बड़ा महत्व है। लोग बड़ी – बडी किताबें बिना समझे, उनमें निहित संदेशों के सार को समझे बिना पढ़ते रहते है। इसलिये, किताबे पढ़ना ज्ञान के प्रेवश द्वार की गांरटी नहीं है। मानव के तीन वर्ग है– ज्ञान के प्रेमी, सम्मान के प्रेमी और लाभ के प्रेमी आधुनिक समय में, हम पहले वाले की तुलना में बाद वाले दो को अधिक महत्व देते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य महत्वपूर्ण एवं बड़ा है। यह मानव के विकास की प्रक्रिया से जुड़ा है। इसका बौद्धिक क्षेत्र अधिक बड़ा है। इस सामाजिक चेतना, सहानुभूति और सामाजिक धन सृजन के एक शक्तिशाली साधन के रूप में कार्य करेगा।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

कबीर ने निर्गुण भक्ति धार्मिक, राजनैतिक, अर्थिक तथा सामाजिक मुक्ति के प्रश्नों को उठाया। उसके मूल के मानवमात्र की समता, स्वतंन्त्रता एवं भातृत्व की भावना प्रमुख थी। कबीर की निर्गुण भक्ति और उसका उद्‌देय मध्य युग मे जितना प्रासंगिक था, आज भी उतना ही प्रासंगिक बना हुआ है। स्वतंत्रता भारत में वैधानिक रूप से सभी को समता स्वतंन्त्रता एवं सामाधिकार प्राप्त है। कबीर के अनुसार आडंबर हीि समाज में लड़ाई– झगड़े, संकीर्णता ओर सहिष्णुता के कारण बनते है। इसके व्याप्त दिखावा, ब्राह्म चारों की प्रदर्शनी, बड्‌प्पन को बढ़ाया दिया है हमारे तीर्थ स्थानों पर भक्ति नही लूट मची है।

''मोको कहाँ ढूंढत बढ़े, मैं में तेरे पास में।
ना में देवल ना मैं मस्जिद, ना कावे कैलास में।
ना तो कौनों क्रिया करम में, नहीं जो वैराग में।।

कबीर ने एक ऐसे सामाजिक, सांस्कृतिक, वैचारिक आंदालेन का सूत्रपात किया जो वर्तमान में वर्ग–विहीन समाज की ओर अग्रसर होने के नितांत प्रांसगिक है। उन्होने जिन विसंगतियों, वर्जनाओं, कुरीतियों एवं कुप्रथाओं के खिलाफ आजीवन संघर्ष किया वे आज भी यथावत है। आडंबरों से समाज कभी स्थायी सुख, शांति एवं भाईचारे की बहाली नहीं हो सकती । आज भी स्थिति दबलती नहीं है। कवीर को आत्मसात करने की महंती आवश्यकता है–

साधू भूखा भाव का, धन भूखा नाहिं
धन का भूखा जो फिरै, सो तो साूध नाहि''।

निष्कर्षः– कहा जा सकता है कि कबीर कालीन विकृतियो, असंगतियों रूाढ़ियों एवं अंधविश्वासो से आज भी हमारा समाज मुक्त नहीं हुआ है। आज भी समाज में धार्मिक विद्वेष वयाप्त है , जाति प्रथा, समाज में बढ़ती विषमता, समरसता का अभाव दिखाई देता है, हिंसा, असत्य अज्ञान एवं भम्र में पड़ी मानव जाति आज भी भटक रही है। ऐसी स्थिति में कबीर विचारों पर प्रांसंगिकता पर कोई प्रश्न चिन्ह् नहीं लगाया जा सकता है। वे कल भी प्रासंगिकत थे, आज भी प्रासंगिक है और आने वाले कल में भी प्रासंगिक रहेंगे।

सन्दर्भ –

1. डॉ. श्याम सुन्दरदास, कबीर ग्रन्थवली पृ0 68
2. रमेश चन्द्र शाह : छायावाद की प्रांसगिकता, बाग्देवी पॉकेट बुक्स प्रकाशन, बीकानेर, 2003 संस्करण पृ0 156–157.
3. रवीन्द्र कुमार सिंह, संत–काव्य सामाजिक प्रासंगिकता वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2005, पृ0 16
4. रवीन्द्र कुमार सिंह : संत–काव्य सामाजिक प्रासंगिकता वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2005 पृ0 88
5. विजयेन्द स्नातक डॉ0 रमेशचन्द्र मिश्र : कबीर वचनामृत, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, छटा संस्करण, 2005 पृ0 153